Consumption Fuction - Keynes Psychological Law of Consumption.

(उपभोग फलन - कीन्स के उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम)

उपभोग फलन, आय - उपभोग सम्बन्ध को बताता है। यह "कुल उपभोग तथा समस्त राष्ट्रीय आय" के बीच फलनात्मक संबंध है।

$$C = f(Y)$$

C = उपभोग Y = आय f = फलनात्मक संबंध

यह संबंध इस धारणा पर आधारित है कि अन्य बातें समान रहने पर आय में वृद्धि के साथ-साथ उपभोग में भी वृद्धि होती है

तालिका - 1

| आय (Y) | उपभोग (₹ करोड़ में) C = f(Y) |
|---|---|
| 0 | 20 |
| 60 | 70 |
| 120 | 120 |
| 180 | 170 |
| 240 | 210 |
| 290 | 240 |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोग, आय का बढ़ता हुआ फलन है क्योंकि आय में वृद्धि के साथ-साथ उपभोग व्यय बढ़ता जाता है। आय शून्य होने पर भी लोग अपने पहले की बचतों में से उपभोग पर व्यय करते हैं क्योंकि जीवित रहने के लिए खाना तो पड़ेगा ही।

उपभोग फलन की विशेषताएं →

(1) औसत उपभोग प्रवृत्ति → यह आय के किसी विशेष स्तर से उपभोग व्यय का अनुपात है।

$$APC = C/Y$$

(2) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति - यह उपभोग में परिवर्तन का आय में परिवर्तन से अनुपात है। या कह सकते हैं कि यह आय में परिवर्तन होने पर औसत उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन की दर है।

* कीन्स का उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम →

जब वास्तविक आय बढ़ती है तो व्यक्ति अपने अपना उपभोग बढ़ाते हैं, परंतु उपभोग की वृद्धि आय की वृद्धि से कम होती है।

अर्थात, यदि किसी व्यक्ति की आय बढ़ती है तो वह अपने उपभोग को कुछ हद तक बढ़ाएगा, लेकिन पूरी अतिरिक्त आय खर्च नहीं करेगा। शेष आय वह बचत के रूप में रखेगा।

नियम के मुख्य तत्व →

(i) आय और उपभोग में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।

(ii) उपभोग की वृद्धि आय की वृद्धि से कम होता है।

(iii) शून्य आय होने पर भी व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खर्च करता है।

(iv) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) हमेशा 0 और 1 के बीच होता है। ($0 < MPC < 1$).

(v) आय बढ़ने के साथ-साथ बचत की प्रवृत्ति भी बढ़ती है। इसे सीमान्त बचत प्रवृत्ति कहते हैं,

अर्थात $MPC + MPS = 1$